नाचने-गाने वाला आदमी

कैरन, हिंदी : विदूषक

नाचने-गाने वाला आदमी

कैरन, हिंदी : विदूषक

दादाजी एक ज़माने में बहुत अच्छा नाचते-गाते थे. उनके कई शो स्टेज पर आयोजित हुए थे.

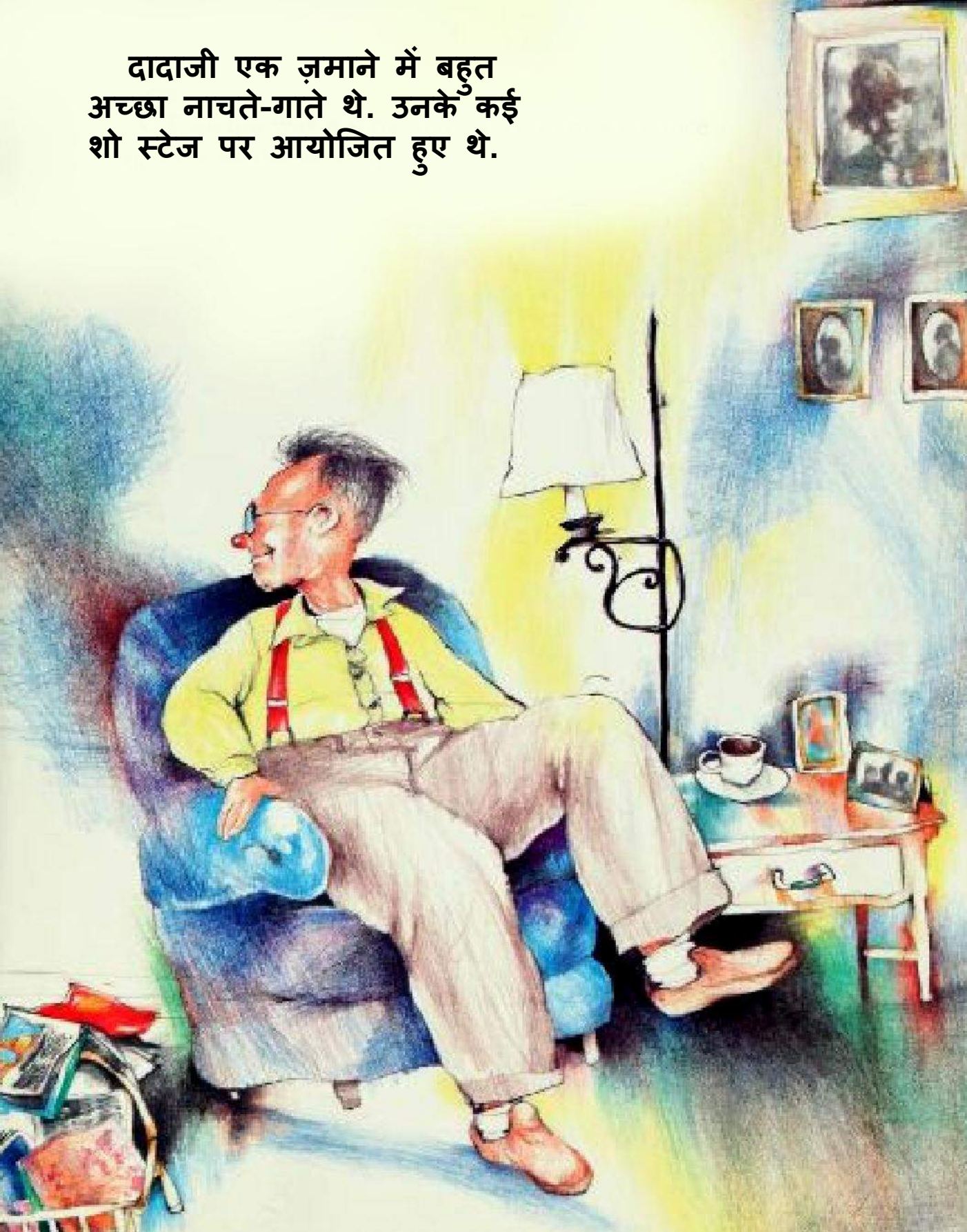

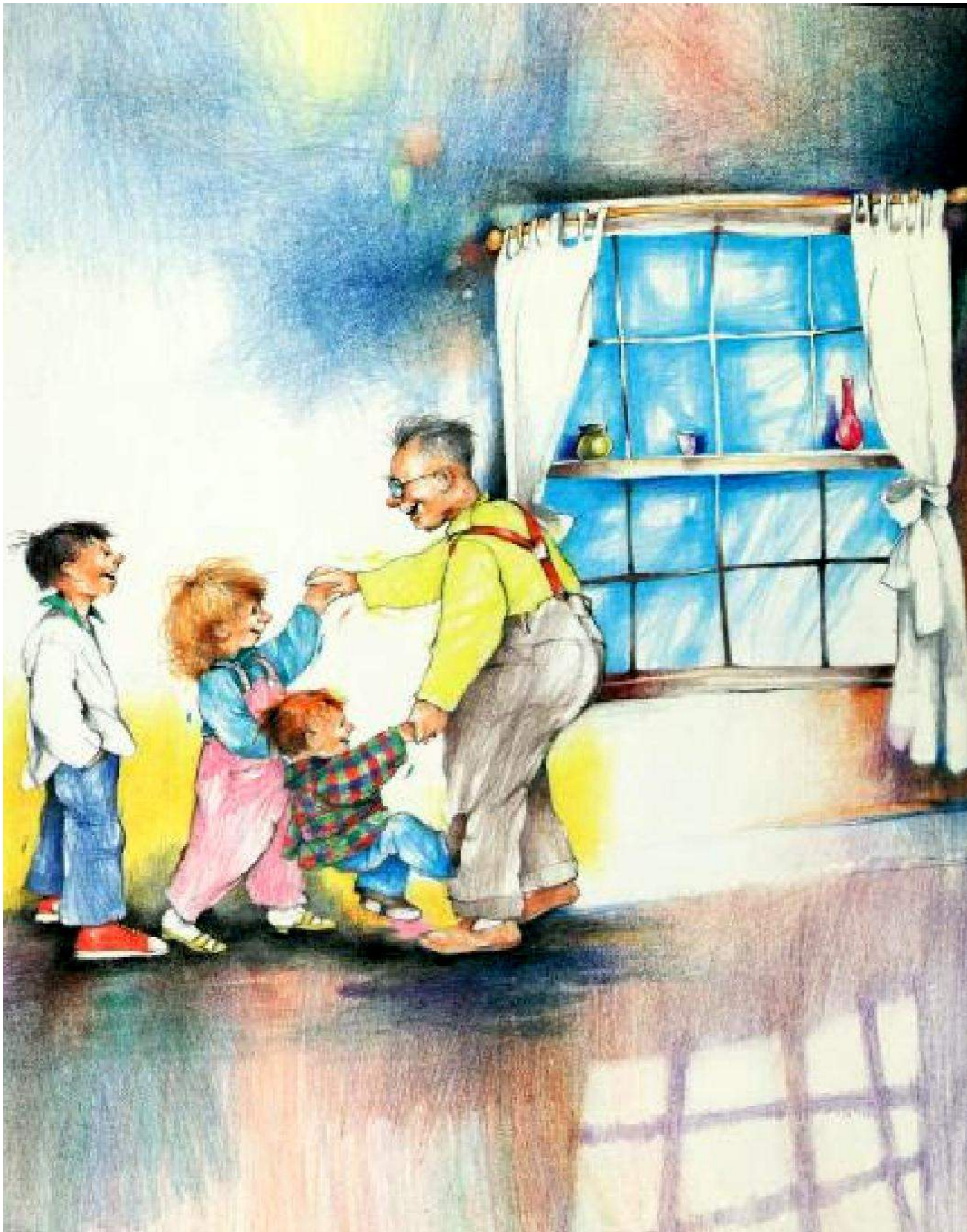

जब हम उनसे मिलने जाते तो दादाजी हमें पुराने ज़माने की कहानियां सुनाते. पुराने ज़माने में कोई टेलीविज़न नहीं होता था. लोग मनोरंजन के लिए नाचते-गाते थे.

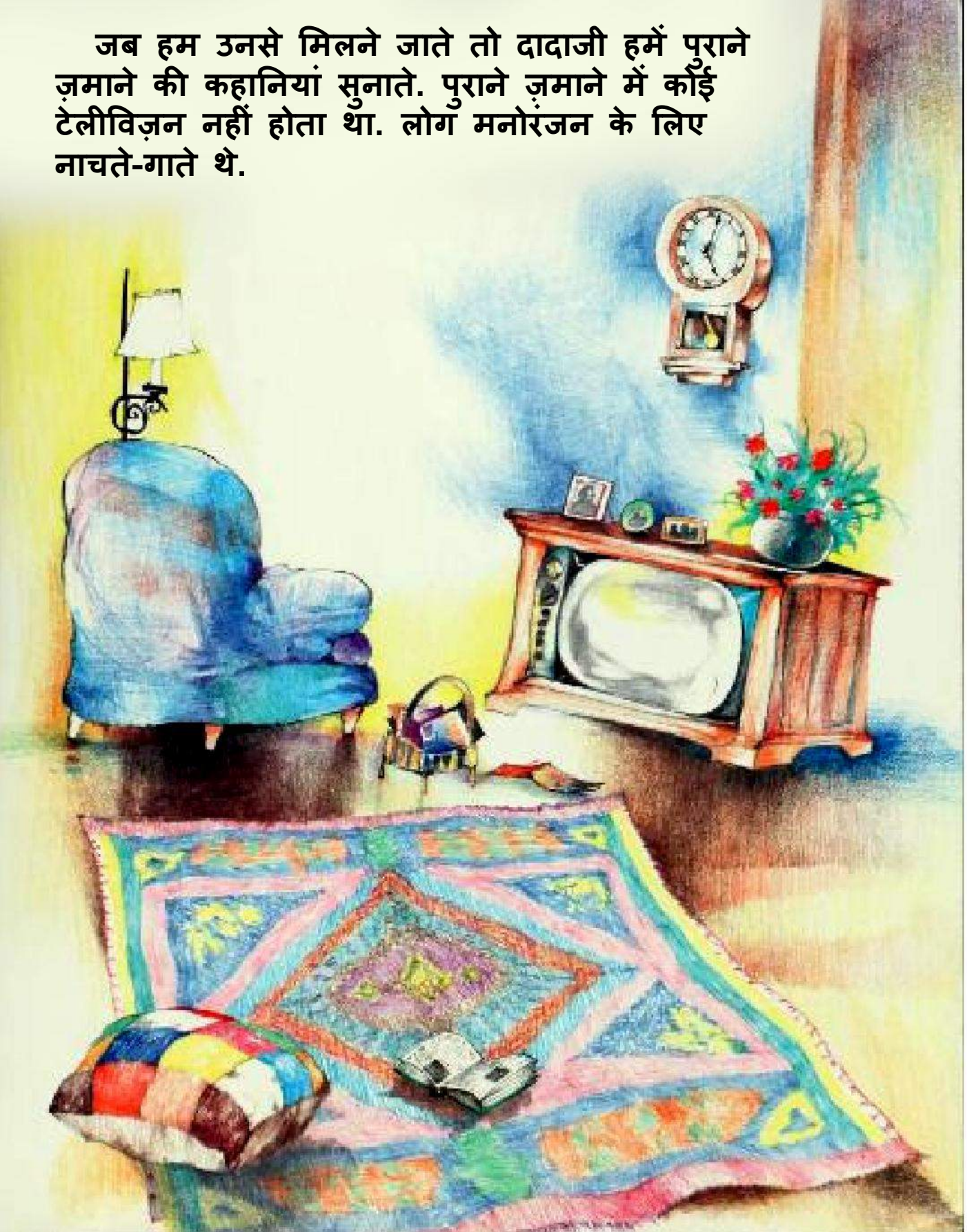

“एक घंटे में खाना तैयार हो जाएगा!” दादी ने किचन में से चिल्लाकर ऐलान किया.

“मैं देखता हूँ कि क्या मेरे नाच वाले जूते मुझे अभी भी फिट आते हैं?” दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा. फिर उन्होंने अटारी का बल्ब जलाया और वो लकड़ी की सीढ़ियों पर चढ़े. हम भी उनके पीछे-पीछे गए.

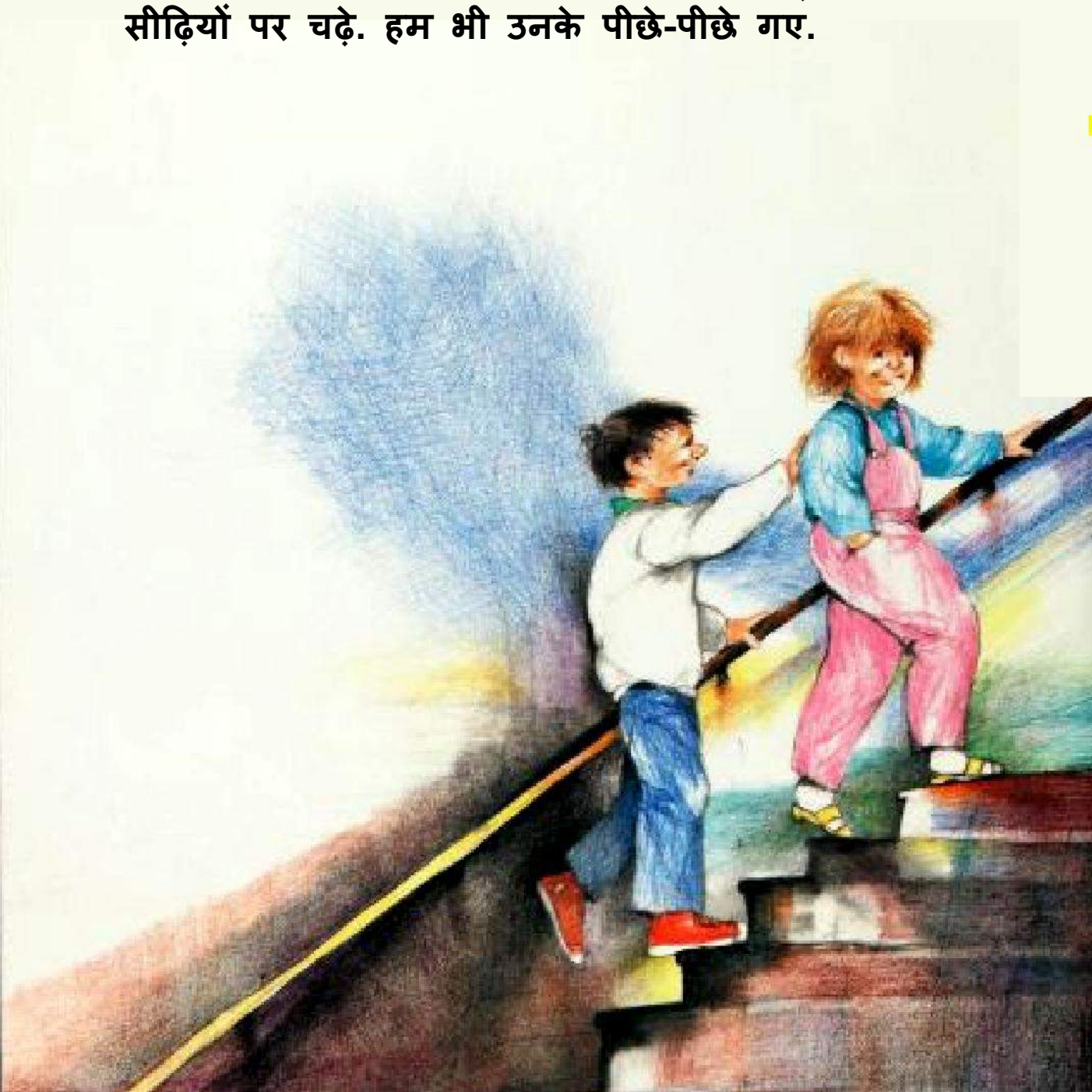

5

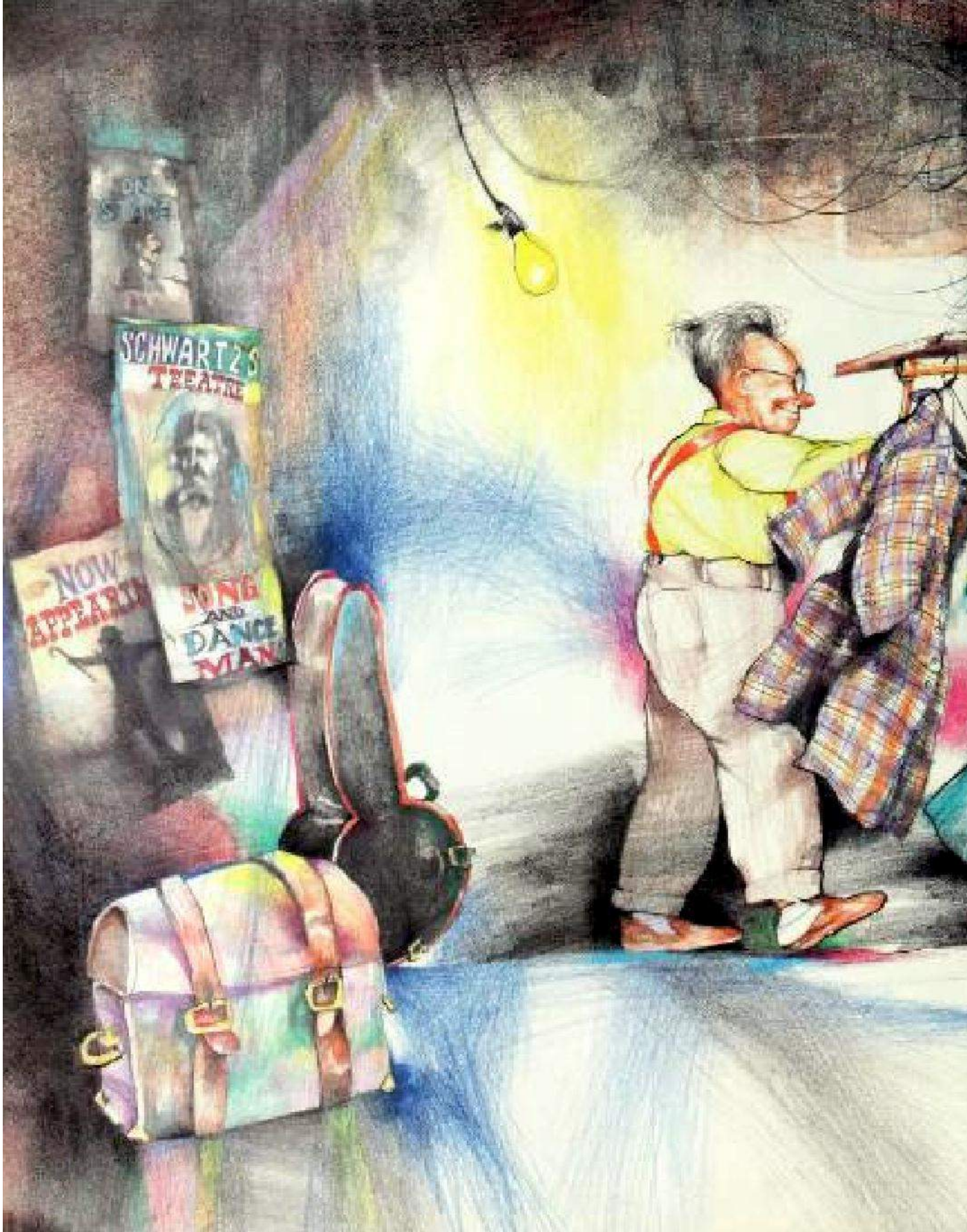
SCHWARTZ'S
THEATRE
SONG
AND
DANCE
MAN

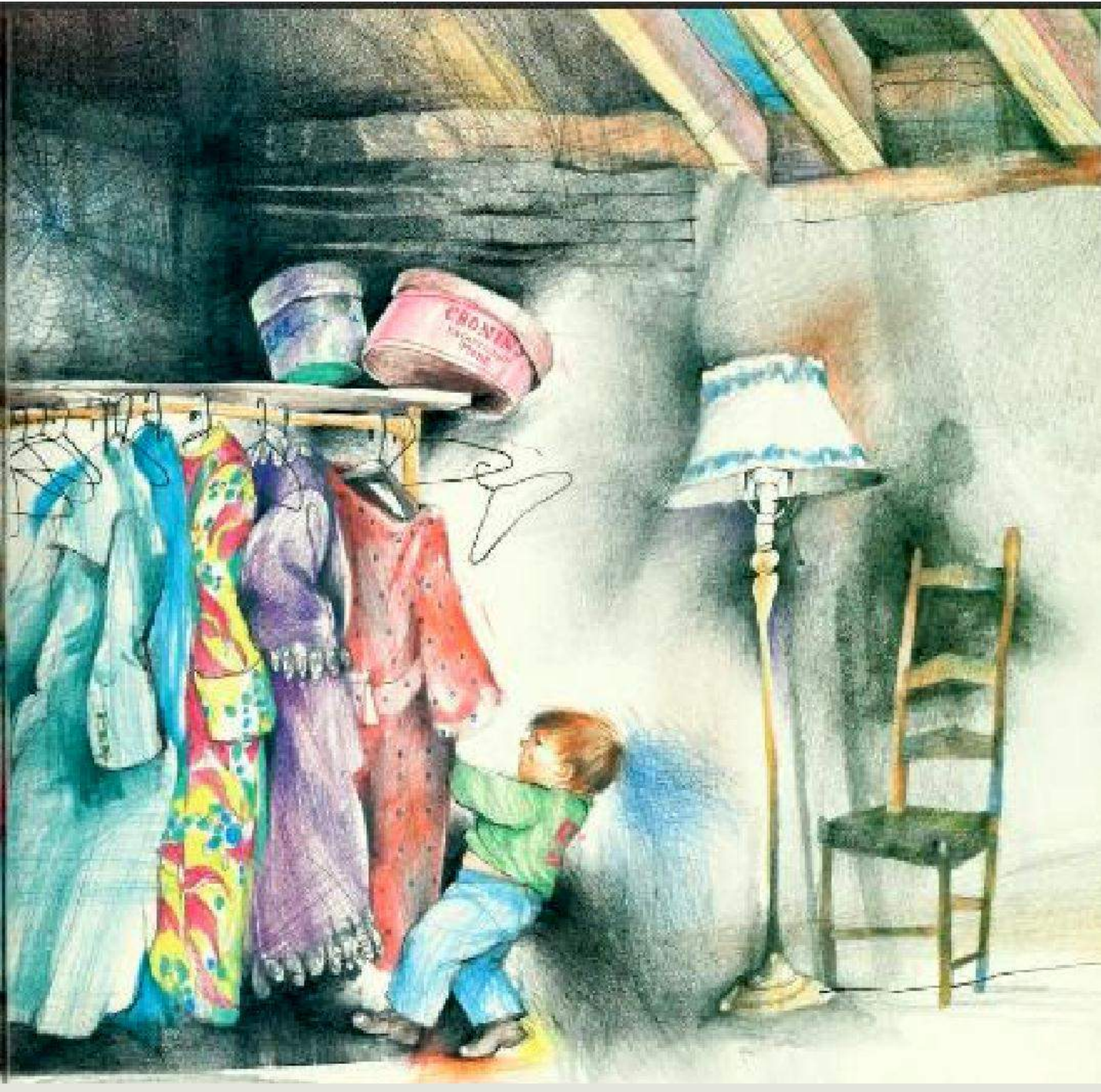

वहां पर दादाजी की जवानी के ज़माने के पोस्टर लगे थे. उन्होंने कुछ गत्ते के डिब्बों को खिसकाया. उनमें से कुछ में दादी के सर्दियों के कपड़े भरे थे. फिर हमें कोने में धूल से लदी एक चमड़े की अटैची दिखी.

जैसे ही दादाजी ने अटैची खोली उसमें से पुरानी लकड़ी की अच्छी खुशबू निकली और उस महक से पूरी अटारी भर गई. अटैची के अन्दर दादाजी के नाचने वाले जूते और तमाम तरह की टोपियाँ और टाई रखी थीं.

हम लोगों ने अपने सिरों पर टोपियों और हैट्स को पहनकर देखा और ऐसी एक्टिंग की जैसे हम चमकीली रोशनियों में स्टेज पर नाच रहे हों. स्टेज पर पियानो-वादक संगीत के साथ-साथ अपना सिर भी हिला रहा हो.

फिर दादाजी ने नाचने वाले जूतों को कपड़े से अच्छी तरह पोछा. उसके बाद उन्होंने जूते पहने. उन्होंने जूतों में कुछ रुई ठूंसी जिससे कि जूते उन्हें चुभें नहीं. फिर उन्होंने ऊपर के लैंप जलाये और हरेक को स्पॉटलाइट जैसे इंगित किया.

उसके बाद उन्होंने फर्श पर कुछ पाउडर छिड़का. फिर शो का समय शुरू हुआ. हम लोग दादी के एक ऊनी कम्बल पर बैठ गए और तालियाँ बजाने लगे और चिल्लाने लगे, “वाह! दादाजी!”

फिर नाचने और गाने वाले आदमी ने अपना नाच शुरू किया. शुरू में उनके पैर धीरे-धीरे थिरके. उन्होंने अपने जूतों को लकड़ी पर हल्के-हल्के मारकर टीन की छत पर बारिश गिरने की आवाज़ पैदा की.

हम लोग सब भूल गए कि दादाजी नाच रहे थे क्योंकि अब हमें सिर्फ उनके पैरों की थिरकन ही दिखाई दे रही थी. और नाचने वाले दादाजी स्टेज पर एक कोने से दूसरे कोने पर लहराते हुए जा रहे थे.

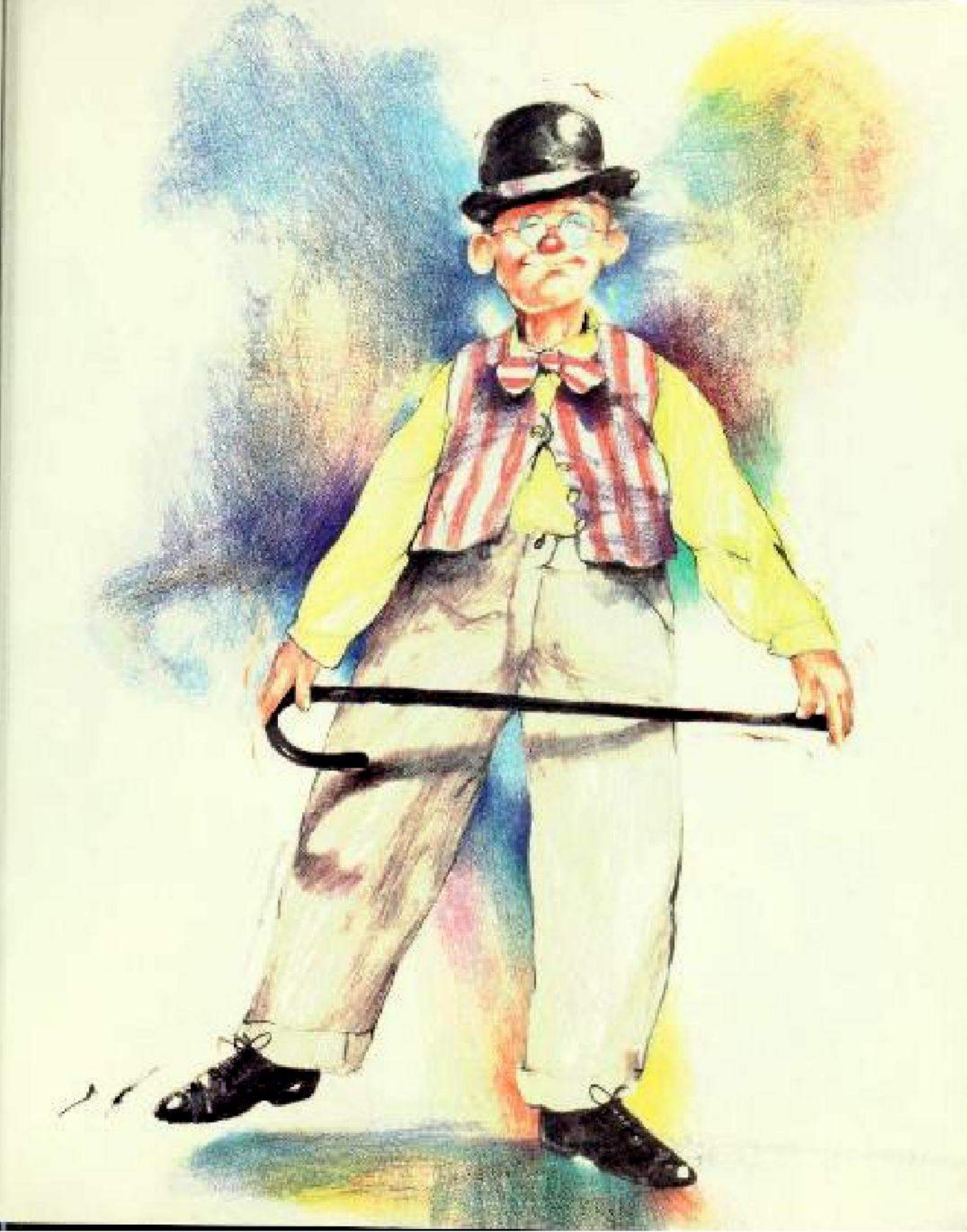

फिर दादाजी ने कहा, “इसे देखो!” अब उन्होंने अपने पैरों को एक नई तर्ज़ पर चलाना शुरू किया जिससे बिल्कुल कठफोव्ड़े के पेड़ के तने पर चोंच मारने की आवाज़ आने लगी. फिर उनके जूते बहुत तेज़ी से चलना शुरू हुए और उसके बाद वो गाने लगे. उन्होंने “यान्की, डूडल बॉय,” वाला बुलंद गीत गया, जिसे वो पुराने ज़माने से गाते चले आ रहे थे.

उस गीत में नाच की तमाम बारीकियां थीं और बहुत से शब्द थे जो हमें समझ नहीं आए. पर दादाजी का शो किसी भी टेलीविज़न शो से ज्यादा मनोरंजक था.

फिर नाचने और गाने वाले दादाजी रुके और आगे को झुके.

“अरे तुम्हारे कान में क्या है?” उन्होंने पूछा. फिर उन्होंने उसके बालों में से एक चांदी का डॉलर खींचकर बाहर निकाला.

फिर उन्होंने किसी जादूगर की तरह अपनी गोल हैट को कंधे से फिसलाया और हाथ में पकड़ा. फिर उन्होंने हैट को हाथ से ऊपर उछाला और वो ठीक उनके सिर में जाकर बैठा.

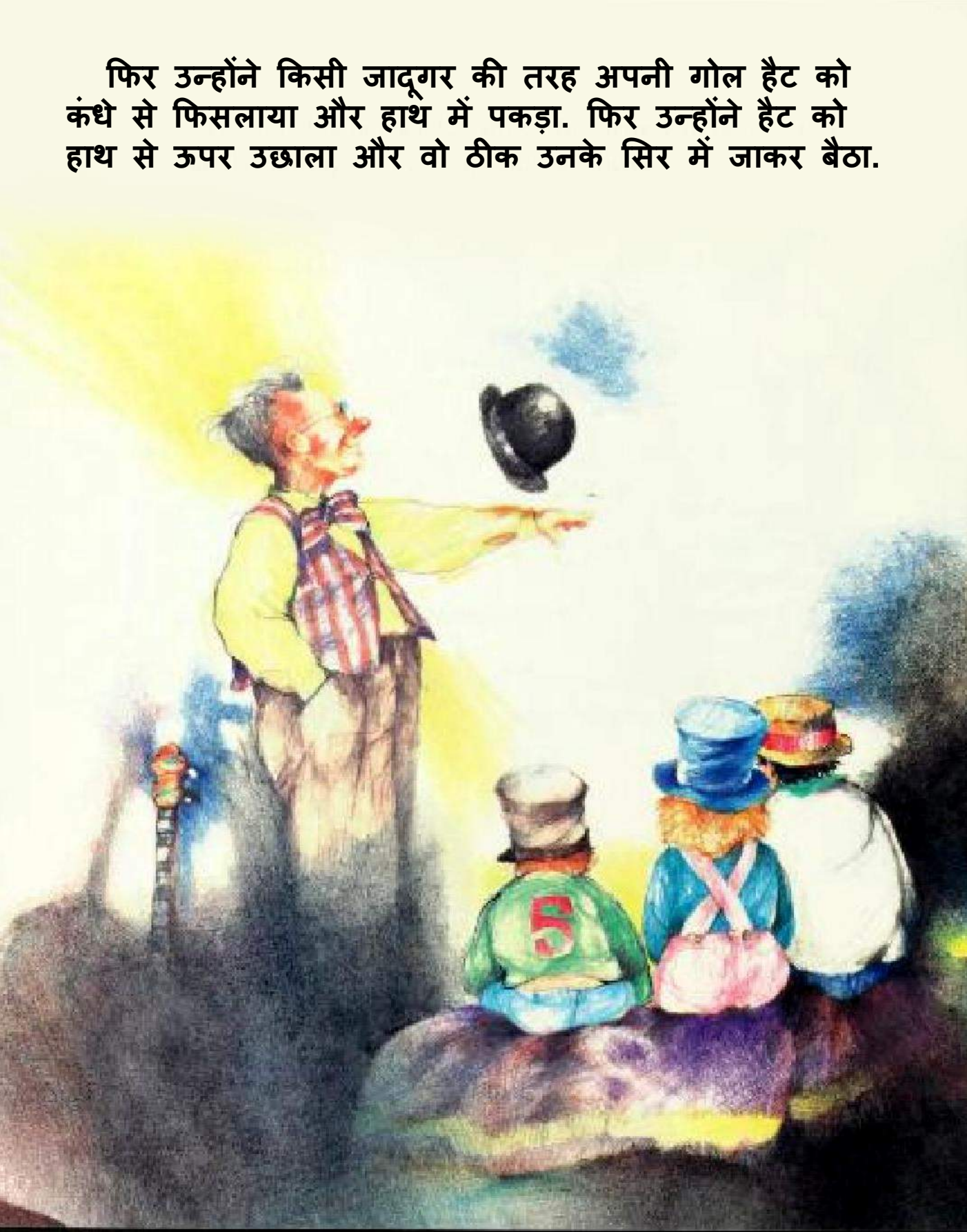

“क्या तुम एक हाथी को तैरा सकते हो?” उन्होंने पूछा. “एक चम्मच आइस-क्रीम, दो चम्मच सोडा और तीन चम्मच हाथी!”

हमने यह मज़ाक पहले भी सुना था. पर उसे सुनने के बाद नाचने और गाने वाले दादाजी ने अपने हाथ को अपने घुटने पर मारा और इतना हँसे कि उनकी आँखों से पानी निकलने लगा.

उन्होंने अपने आंसुओं को लाल रूमाल से पोंछने की कोशिश की. पर जैसे ही उन्होंने अपनी कमीज़ की जेब से रूमाल खींचा वो खिंचता ही गया और लम्बा होता चला गया. हम सब लोगों को हँसते हुए देखकर दादाजी को बहुत आश्चर्य हुआ. ऐसा लग रहा था जैसे पूरी अटारी हिल रही हो.

एक बार हम इतनी जोर से हँसे कि हमें हिचकियाँ आने लगीं. फिर दादाजी हमारे लिए एक गिलास पानी लेकर आए.

“इसे हल्के-हल्के पियो और कुछ देर के लिए अपनी सांस रोककर रखो,” उन्होंने कहा, “नहीं तो मुझे तुम्हें डराना पड़ेगा!”

जब हमारी हिचकियाँ रुक गईं तब वो संदूक में से एक सोने के छल्ले वाली छड़ी और रेशम की काली टोप निकाल कर लाए. उन्होंने अपनी आँखें नीचे कीं और फिर टोप को पहनने के बाद एकदम शांत खड़े हो गए.

सभी लाइट्स को धीमा कर दिया गया. सिर्फ एक स्पॉट-लाइट दादाजी के नाचने वाले जूतों पर चमक रही थी. यह शायद दादाजी की अंतिम कृति थी इसलिए उन्होंने एक गहरी सांस ली. फिर उन्होंने छड़ी को उठाकर दोनों हाथों में पकड़ा.

फिर धीरे-धीरे उनके पैर थिरकते हैं. उनके जूते तेज़ी, और तेज़ी से चलने लगे. उनसे कई तरह की आवाजें निकलीं. क्या दो पैरों से इतनी आवाजें निकलना संभव था?

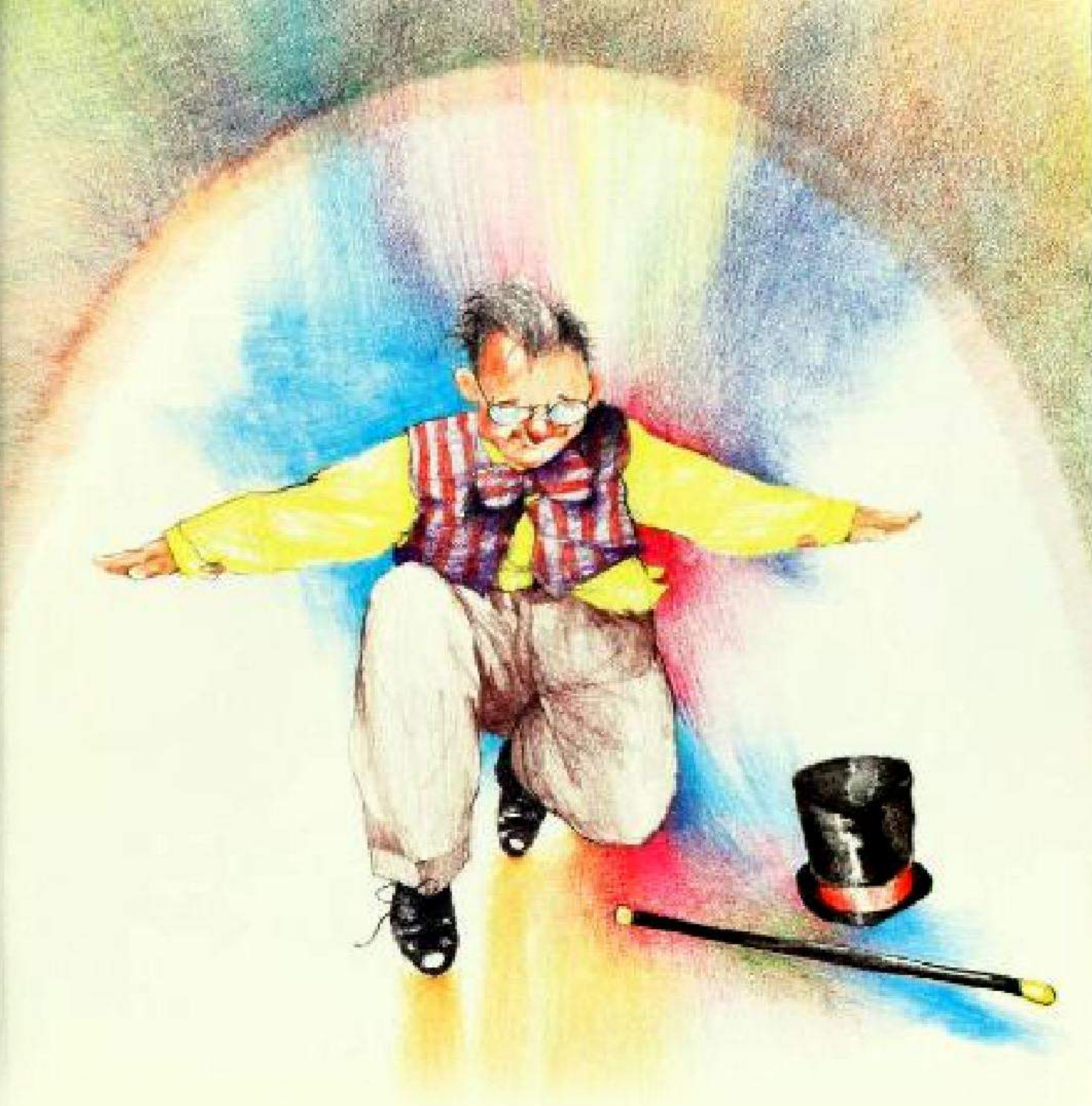

उसके बाद दादाजी हवा में कूदे और लट्टू की तरह गोल-गोल घूमे. फिर जैसे ही उनके पैरों ने फर्श को छुआ उन्होंने झुककर अपने दोनों हाथों को फैलाकर हमारा अभिवादन किया. उनकी रेशमी टोपी और छड़ी उनके पैरों के पास ही रखी थी. अब उनके जूते स्थिर थे. शो अब ख़त्म हो चुका था.

उसके बाद हम सब लोगों ने खड़े होकर तालियाँ बजाईं और चिल्लाए, “वाह!” “कमाल!” “एक बार फिर!” पर दादाजी सिर्फ मुस्कुराए, और उन्होंने अपना सिर हिलाया, क्योंकि अब उनकी सांस फूल रही थी. फिर उन्होंने नाचने वाले जूते उतारे और उन्हें प्रेम से कागज़ में लपेटकर दुबारा चमड़े वाली अटैची में वापिस रखा. फिर उन्होंने बड़ी सावधानी से अपनी बनियान मोड़ी और उसके ऊपर अपनी हैट और छड़ी रखी. फिर हम सीढ़ियों पर उनके साथ नीचे उतरे.

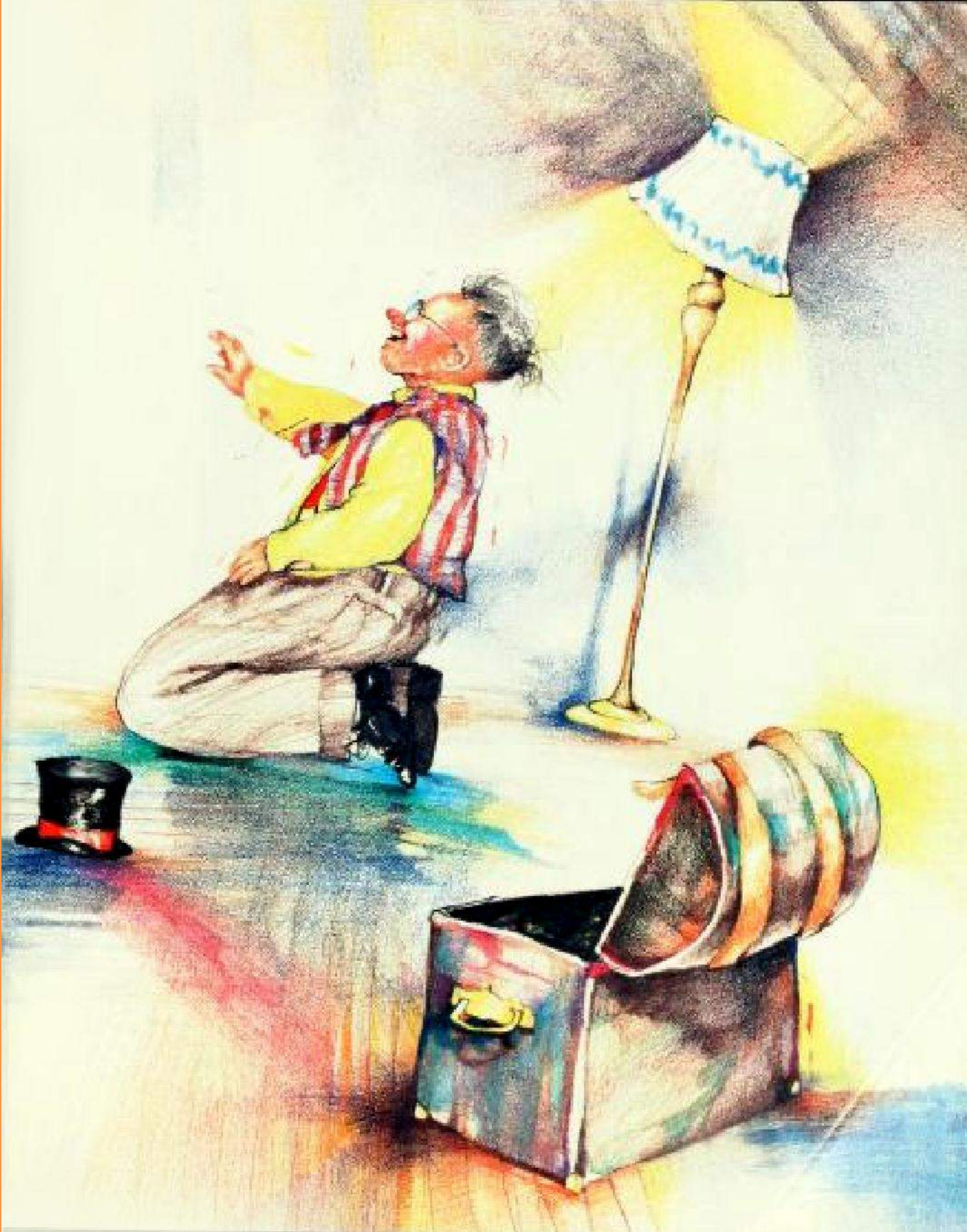

दादाजी ने रेलिंग पकड़ी और फिर हम लोग सीढ़ियों के नीचे उतरे.

नीचे उतरने के बाद दादाजी ने हम सबको अपने गले लगाया. काश! हम लोगों ने उन्हें पहले कभी नाचते-गाते देखा होता! दादाजी मुस्कुराए और उन्होंने कहा कि अभी-अभी हमारे साथ समय गुजारकर उन्हें कितना मज़ा आया!

पर जब दादाजी ने अटारी का बल्ब बुझाया तब हमें इस बात का एहसास कि हुआ दादाजी अपने उन पुराने सुनहरे दिनों को कितना याद करते होंगे - जब वो स्टेज पर रोजाना नाचते-गाते थे.

1989 में कैलडीकोट मैडल से सम्मानित पुस्तक